بسم الله الرحمن الرحيم

لا إله إلا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -23
Issue - 03

राह-ए-ईमान

मार्च
2021 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी 3
4. रूहानी ख़ज़ायन 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः 20-03-2020 08
7. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में निबंध रचना तथा धार्मिक चर्चाओं के मध्य ख़ुदा तआला का समर्थन और ईमानवर्धक घटनाओं का प्रकटन 12
8. अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम 18
9. जमाअत अहमदिया का परिचय 27
10. मुश्किलों के भँवर से मुक्ति प्राप्त करने का रास्ता 32

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्यः 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

अनुवाद:- हे हमारे रब ! निसंदेह हमने एक मुनादी करने वाले की आवाज़ सुनी जो ईमान की मुनादी कर रहा था कि अपने रब पर ईमान ले आओ। अत: हम ईमान ले आए हैं। हे हमारे रब! हमारे गुनाह (पाप) क्षमा कर दे और हमसे हमारे दोष दूर कर दे और हमें नेकों (अर्थात् अच्छे लोगों) के साथ मृत्यु दे। (आले इमरान -194)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

फारसी नस्ल वाले का आगमन

अनुवाद: आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सभा में हज़रत सलमान फारसी रज़ियअल्लाह अन्हु के कंधे पर हाथ रखकर फरमाया - यदि ईमान सुरैया सितारे पर भी चला गया तो एक फारसी नस्ल का व्यक्ति या कुछ लोग उस ईमान को पुन: संसार में स्थापित करेंगे। (बुख़ारी किताबुत्तफसीर सूरह अल जुमा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं- कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तक ईसा इब्ने मरियम जो इंसाफ करने वाले हाकिम और समानता का व्यवहार करने वाले इमाम होंगे, अवतरित होकर नहीं आते क़यामत नहीं आएगी। (जब वह अवतरित होंगे तो) वह सलीब को तोड़ेंगे और सूअर को कत्ल करेंगे जिज़िया के दस्तूर को समाप्त करेंगे और ऐसा माल विभाजित करेंगे जिसे लोग स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगे। (सुनन इब्ने माजा, किताबुल फितन...)

☆ ☆ ☆

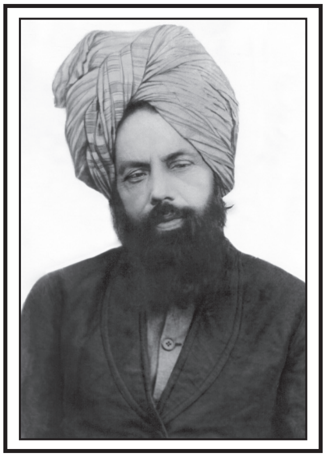

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

सच्चों के अनुसरण में आ जाओ

देहली के जलसे में जो लोग बड़ी रुचि के साथ जाते हैं केवल इस लिए कि वहां कुछ विकृत शकलों को देखें और क्या देखंगे यह लोग ऐसे दूर के विचारों में पड़े हैं कि जब फरिश्ते आ कर प्राण निकालेंगे तो उस समय उनको खेद होगा।

ईमान लाने और ख़ुदा की महानता हृदय में होने की प्रथम निशानी यह है कि मनुष्य उन समस्त को कीड़ों के समान समझे उनको देख कर दिल में लालसा करे कि यह सुन्दर कपड़े पहने घोड़ों पर सवार हैं। वास्तव में उन लोगों की क़िस्मत बुरी और कुत्तों का सा जीवन है (कि मुरदार दुनिया पर दांत मार रहे हैं।) इन्सान को यदि देखने की इच्छा हो तो उनको देखे जो परहेज़गार हैं और ख़ुदा की ओर आ गए हैं और ख़ुदा उन को जीवित करता है उनको मिलने से कष्टों का निवारण होता है जो व्यक्ति रहमत वाले के पास आएगा तो वह रहमत के निकटतर होगा और जो एक लानती के पास जाएगा वह लानत के निकट होगा। दुनिया में यही बात विचारयोग्य है ख़ुदा तआला फ़रमाता है كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (अत्तौबा :119) अर्थात हे बन्दों! तुम्हारा बचाव इसी में है कि सच्चों के साथ हो जाओ।

फिर नमाज़ की मिठास के बारे में फ़रमाया कि :-

नमाज़ में विकास धीरे-धीरे हुआ करता है यह आप का सौभाग्य है कि आप यहाँ आ गए यदि ख़ुदा न चाहता तो आप क्या करते? संभव था कि पहले दिल्ली की ओर जाते तो वहां से केवल डींगे मारने के क्या साथ ले जाते या कुछ एक तमाशा खेल कूद का देख लेते।

प्रश्नकर्ता ने कहा कि मेरा विचार था कि आप अवश्य दिल्ली के जलसे में होंगे आप का कैंप अपने जमाअत के साथ अलग होगा।

हज़रत अक्दस ने फ़रमाया कि :- हम इन बातों से ऐसे घृणा करते हैं कि उनके तंबू हमारे निकट भी हों तो हम यह इच्छा करेंगे कि ख़ुदा शीघ्रतर उनको यहाँ से उठा दे जैसे एक मुरदार जब पास पड़ा हो तो उसे शीघ्र उठा देते हैं कि कहीं सड़ गल कर बीमारी का कारण न बने।

प्रश्नकर्ता ने पूछा कि इस से पहले मुझे जल्से का बहुत शौक़ था परन्तु अब दो-तीन दिन से तनिक ध्यान तक भी नहीं है हुज़ूर से मिलने को जी चाहता है। हज़रत अक्दस ने फ़रमाया कि सच्चाई यही है।

(अलबदर जिल्द 1 नंबर 11 दिनांक 9 जनवरी 1903 ई० पृष्ठ 85,86)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है?

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

"तो यह बात उचित है कि उन आकर्षणों के चरम सीमा के ज़ोरों के समय जो संसार का अन्तिम युग है इन दोनों में लड़ाई होना चाहिए थी क्योंकि प्रताप चाहता है कि विरोधी सदस्य को मिटा दे। तो जिस अवसर और स्थान में दोनों सदस्य समान स्तर का प्रताप और वैभव रखेंगे ऐसे दो सदस्य लड़ाई के बिना नहीं रह सकते क्योंकि प्रत्येक ख़ुदा के नबियों की किताबों में भविष्यवाणी के तौर पर वर्णन की गई है। इसी प्रकार बुद्धि भी इसको आवश्यक समझती है। क्योंकि जब दो विपरीत तथा शक्तिशाली आकर्षणों में परस्पर टक्कर हो तो आवश्यक है कि एक दूसरे को फ़ना (नष्ट) कर दे या दोनों फ़ना हो जाएँ। इस लड़ाई के बारे में नबियों की किताबों में इस प्रकार वर्णन किया गया है कि जब हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर पूरा एक हज़ार वर्ष गुज़रा जिसमें नबियों की भविष्यवाणी के अनुसार शैतान क़ैद किया गया था तो निम्नकोटि के आकर्षण ने पृथ्वी पर अपना रंग जमाना आरंभ किया। यह वही युग था जबकि इस्लाम अपने पवित्र सिद्धान्तों की दृष्टि से अवनति की हालत की ओर झुक गया था और उसकी रूहानी उन्नति रुक गई थी और उसकी भौतिक विजयों का भी अन्त हो गया था और वह शैतान के क़ैद होने के दिनों में पैदा हुआ और अवश्य ऐसा ही होना चाहिए था जैसा कि समस्त नबियों ने यूहन्ना धार्मिक विद्वान तक गवाही दी है और शैतान के छूटने पर अर्थात 1000 ई० के बाद उसका पतन आरंभ हो गया और वह आगे बढ़ने से रुक गया। तब से शैतानी कारवाइयां भिन्न-भिन्न प्रकार की पद्धतियां में आरंभ हुईं और पृथ्वी पर यह पौधा बढ़ता गया और उसकी शाखाएं कुछ तो पूरब की ओर फैल गईं और कुछ पश्चिम की अन्तिम आबादियों तक जा निकलीं और कुछ दक्षिण की ओर तथा कुछ ने उत्तर की ओर ध्यान दिया जैसा कि शैतान के क़ैद रखने का समय हज़ार वर्ष था जिस पर बाहरी घटनाओं ने गवाही दी है ऐसा ही नबियों की भविष्यवाणियों की दृष्टि से शैतान के छूटने का समय भी हज़ार वर्ष ही था जो हिजरत की चौदहवीं सदी के सर पर पूरा हो जाता है। परन्तु हज़ार वर्ष ख़ुदा के हिसाब के अनुसार हैं अर्थात चांद के हिसाब से तथा ख़ुदा की ओर से यहूदियों और मुसलमानों को भविष्यवाणियों के समयों को पहचानने के लिए यही हिसाब दिखाया गया है और सूर्य के दिनों की दृष्टि से हिसाब करना मनुष्यों की बिदअत है जो पवित्र लेखों के आशय के विपरीत है। अतः इस हिसाब की दृष्टि से शैतान की मुहलत (छूट) के अन्तिम दिन यही हैं जिन में हम हैं बल्कि यूं समझो कि गुज़र भी चुके, क्योंकि हिजरी सदी जिस के सर पर हज़ार वर्ष शैतान के छूटने का पूरा हो गया उस को उन्नीस वर्ष गुज़र चुके और शैतान नहीं चाहता कि उस से आज़ादी और हुकूमत छीन ली जाए विवशतावश दोनों आकर्षणों की लड़ाई होगी जो प्रारम्भ से मुकद्दर थी और संभव नहीं है कि ख़ुदा का कलाम ग़लत हो। और इन दिनों पर एक दूसरी गवाही यह है कि संसार के प्रारम्भ से अर्थात आदम के प्रकटन से आज तक छठा हज़ार भी गुज़र गया जिस में आदम द्वितीय पैदा होना चाहिए था। क्योंकि छठा दिन

आदम की पैदायश का दिन है और ख़ुदा की पवित्र किताबों की दृष्टि से एक हज़ार वर्ष ऐसा है जैसा कि एक दिन। तो यह बात ख़ुदा के पवित्र वादों के अनुसार माननी पड़ती है कि वह आदम पैदा हो गया। यद्यपि वह अभी पूर्ण रूप से पहचाना नहीं गया और साथ ही यह भी मानना पड़ता है कि इस आदम का स्थान जो ख़ुदा के हाथ से रखा गया वह पूर्वी है न पश्चिमी। क्योंकि तौरात बाब-2 आयत 8 से यही सिद्ध होता है कि आदम को एक बाग़ में पूर्वी ओर स्थान दिया गया था। तो अवश्य है कि यह आदम भी पूर्वी देश में ही प्रकट होता कि प्रथम और अन्तिम की स्थानीय समरूपता क़ायम रहे। और इस इक़रार से जैसा कि मुसलमानों को चारा नहीं वैसा ही ईसाइयों को भी पलायन का स्थान नहीं बशर्ते कि नास्तिकता की रग बाधक न हो। तो असल सच्चाई को समझने के लिए कुछ कठिनाइयां शेष नहीं रहीं, और यह मसअला बहुत स्पष्ट है कि यह युग प्रकाश और अंधकार की लड़ाई का युग है और अंधकार ने चरम सीमा तक अपना काम कर लिया है और ये आशाएं नहीं की जा सकतीं कि आकाशीय प्रकाश के उतरने के बिना इस अंधकार पर कोई विजयी हो सके। इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं है कि अन्धकार अपने पूरे ज़ोर में है ईमानदारी का अधमरा दीपक बुझने के निकट है और परंपरागत आस्थाएं और परंपरागत ज्ञान तथा नमाज़ें उस प्रकाश को यथावत (बहाल) नहीं कर सकतीं जो खो चुका है क्या अन्धा अन्धे को रास्ता दिखा सकता है? कदापि नहीं! क्या अंधकार अंधकार को दूर कर सकता है? किसी प्रकार संभव नहीं। अब तो एक नवीन मीनार की आवश्यकता है जो पृथ्वी पर तैयार हो जो निम्नकोटि की आबादियों से विशिष्टता के साथ ऊँचा हो ताकि आकाशीय प्रकाश उस पर उतरे और उस पर आकाशीय दीपक रखा जाए फिर समस्त संसार उस प्रकाश से प्रकाशमान हो जाए, क्योंकि यदि दीपक ऊंचे स्थान पर न रखा जाए तो उस का प्रकाश दूर-दूर तक कैसे फैल सके। अब आप को यह समझना शेष है कि मीनार क्या चीज़ है। अत: याद रहे कि मीनार उस पवित्र नफ़्स और मुतह्हर और बुलंद हिम्मत का नाम है जो कामिल इन्सान को मिलता है जो आकाशीय प्रकाश पाने का पात्र जैसा कि मीनार के मायने में यह अर्थ सम्मिलित है। और मीनार की ऊंचाई से अभिप्राय उस इन्सान की बुलन्द हिम्मत है तथा मीनार की दृढ़ता से अभिप्राय उस इन्सान की दृढ़ता है जो वह भिन्न भिन्न प्रकार की परिस्थितियों के समय में दिखाता है और उस की सफेदी और बरीयत है जो अन्तत: प्रकट हो जाती है जब यह सब कुछ हो लेता है अर्थात जब उस को बुलन्द हिम्मत, पूर्ण दृढ़ता, पूर्ण सब्र, दृढ़ता और तर्कों के साथ उस की बरीयत एक चमकते हुए मीनार की भांति खुल जाती है तब उस के प्रतापी आगमन का समय आ जाता है और पहला आगमन जो परीक्षाओं के साथ है उस का समय समाप्त हो जाता है तब वह रूहानियत ख़ुदा के प्रताप से रंगीन हो कर उस अस्तित्त्व (वजूद) पर उतरती है जो मीनार के रूप में खड़ा है तब ख़ुदा की आज्ञा से ख़ुदा के प्रभाव उस में पैदा हो जाते हैं यह सब कुछ द्वितीय आगमन में होता है और मसीह मौऊद का विशेष रूप से आगमन इसी वास्तविकता का पूर्ण चित्र है और मुसलमानों में जो यह रिवायतें हैं कि मसीह मौऊद मीनार के पास उतरेगा। उतरने से अभिप्राय एक प्रतापी तौर का आगमन है जो अपने साथ ख़ुदाई रंग रखता है। यह नहीं कि वह इस से पहले पृथ्वी पर मौजूद नहीं था। परन्तु अवश्य है कि आकाश उसे लिए रहे जब तक कि वह समय न आए जो कि ख़ुदा ने निर्धारित कर दिया है।" (शेष...)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय 23 मार्च मसीह मौऊद दिवस

23 मार्च का दिन जमाअत अहमदिया के इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 23 मार्च 1889 ई० वह दिन था जब हज़रत मसीह मौऊद ने हज़रत सूफ़ी अहमद जान साहिब के घर पर पहली मर्तबा बैअत ली और यूं जमाअत अहमदिया की बुनियाद रखी जिसके द्वारा अल्लाह ने इस्लाम का पुनरुत्थान मुक़द्दर कर रखा था, इस से पहले अगर कोई बैअत लेने का आग्रह करता तो आप उससे कहते कि अभी मुझे हुक्म नहीं हुआ। अत: बैअत न लेने के बारे में आपका एक फ़रमान है-

"बैअत के बारे में अब तक ख़ुदावंद करीम की तरफ़ से कुछ ज्ञान नहीं दिया गया। इसलिए तकल्लुफ़ की राह में क़दम रखना जायज़ नहीं। संभव है कि ख़ुदा इसका कोई मार्ग निकाल दे।"

एक दिसंबर 1888 ई० को आपने पहली दफ़ा बैअत लेने के बारे में एक इश्तिहार (विज्ञापन) "तब्लीग़' के नाम से दिया, जिसमें ख़ुदा के आदेशानुसार बैअत का पैग़ाम दिया। इस बारे में अपना अरबी इलहाम भी दर्ज किया और फ़रमाया कि "मैं इस जगह एक और पैग़ाम भी समस्त मानवजाति को सामान्यरूप से और अपने भाई मुस्लमानों को विशेष रू प से पहुँचाता हूँ कि मुझे आदेश दिया गया है कि जो लोग सत्य के अभिलाषी हैं वह सच्चा ईमान और सच्ची ईमानी पाकीज़गी और मुहब्बत इलाही का राह सीखने के लिए और गुनाहों से लिप्त जीवन और सुस्ती में डूबी हुई और गद्दराना ज़िंदगी के छोड़ने के लिए मुझसे बैअत करें।'

इस के बाद 12 जनवरी 1889 ई० को हज़रत मुस्लेह मौऊद की पैदाइश ही के दिन एक इश्तिहार प्रकाशित किया जिसमें एक दिसंबर के इश्तिहार का ज़िक्र फ़र्मा कर बैअत की दस शर्तें दर्ज कीं।

हज़रत साहिब ने इस इश्तिहार में ये भी नसीहत फ़रमाई कि सुन्नत के अनुसार इस्तिख़ारा के बाद बैअत के लिए हाज़िर हों।

इस के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ादियान से लुधियाना तशरीफ़ ले गए और 4 मार्च 1889 ई० को एक इश्तिहार "बैअत करने के इच्छुक सज्जनों की सेवा में आवश्यक निवेदन" के नाम से प्रकाशित किया जिसमें बैअत के उद्देश्य बयान फ़रमाते हुए फ़रमाया कि 25 मार्च तक आप लुधियाना में ही मुक़ीम रहेंगे और जो लोग बैअत करना चाहें वे 20 तारीख़ के बाद आजाएं।

हज़रत मियां अबदुल्लाह साहिब सिन्नौरी की रिवायत के मुताबिक़ 23 मार्च 1889 ई० को हज़रत साहिब ने जब पहली बैअत ली तो एक कमरा में बैठ गए और शेख़ हामिद अली साहिब को कह दिया था कि जिसे मैं कहता जाऊं उसे कमरा के अंदर बुलाते जाओ। अत: सबसे पहले मौलवी हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब को अंदर बुलवाया और उनकी बैअत ली। इसी तरह बाक़ी अफ़राद को एक-एक करके अंदर बुलवा कर बैअत लेते गए। इस वक़्त बैअत के अलफ़ाज़ निम्नलिखित हैं-

आज मैं अहमद के हाथ पर अपने तमाम गुनाहों और ख़राब आदतों से तौबा करता हूँ जिनमें मैं ग्रस्त था और सच्चे दिल और पक्के इरादे से वादा करता हूँ कि जहां तक मेरी ताक़त और समझ है अपनी उम्र के आख़िरी दिन तक तमाम गुनाहों से बचता रहूँगा और धर्म को दुनिया के आरामों और नफ़्स के आनंदों

पर मुक़द्दम रखूँगा और 12 जनवरी की दस शर्तों पर यथासामर्थ्य कारबंद रहूँगा और अब भी अपने पिछले गुनाहों की ख़ुदा तआला से माफ़ी चाहता हूँ। फिर दुआ पढ़ते हैं- अस्तग्फिरुल्लाह रब्बी मिन कुल्ले ज़म्बिन व अतूबु इलैहि, रब्बे इन्नी ज़लम्तु नफ्सी.......

बैअत के उद्देश्य का वर्णन करते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- ये सिलसिला बैअत केवल तक़्वा शिआर (संयमी) लोगों की जमाअत के इकठ्ठा करने के लिए है ताकि ऐसे मुत्तक़ियों का एक भारी गिरोह दुनिया पर अपना नेक असर डाले और उनकी एकता इस्लाम के लिए बरकत और महानता और अच्छे परिणाम का कारण हो और... जो निकम्मे और बख़ील, बेमुसर्रफ़ न हों और न उन नालायक़ लोगों की तरह जिन्होंने अपने फूट और मतभेद के कारण इस्लाम को सख़्त नुक़्सान पहुंचाया है और इस के ख़ूबसूरत चेहरा को अपनी दुष्ट हालतों से दाग़ लगाया है और न ऐसे लापरवाह दरवेशों और गोशा गुज़ीनों की तरह जिनको (दीनी ज़रूरतों की कुछ ख़बर नहीं और अपने भाइयों की हमदर्दी से कुछ मतलब नहीं और मानवजाति की भलाई के लिए जोश नहीं।

अत: जमाअत अहमदिया की नींव रखे हुए और इस भविष्यवाणी को प्रकाशित हुए सौ साल से अधिक समय बीत चुका है। जमाअत अहमदिया का इतिहास उस गौरव का गवाह है जिसके साथ हमने इस भविष्यवाणी के हर शब्द को आज तक पूरा होते देखा है। आज जमाअत अहमदिया दुनिया के हर महाद्वीप में मौजूद है। दुनिया के हर कोने में अपने ख़लीफ़ा और इमाम सय्यदना मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाह के ज़ेर-ए-साया धर्म को दुनिया पर ग़ालिब करने के आसमानी मिशन में व्यस्त हैं।

फ़रहत अहमद आचार्य

☆ ☆ ☆

पत्रिका राह-ए-ईमान का पंजीकरण

1- समाचार पत्र का नाम : राहे ईमान

2- समाचार पत्र की पंजीयन संख्या:

PUNHI NO/ 1999/4052

3- भाषा: हिन्दी

4- प्रकाशन का नियत काल : मासिक

5- प्रकाशक एवं मुद्रक नाम:

शुएब अहमद

राष्ट्रियता: भारतीय

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान गुरदासपुर, पंजाब

6- संपादक: फरहत अहमद

राष्ट्रियता: भारतीय

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान, गुरदासपुर, पंजाब

7- मुद्रण का स्थान:

फज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान, गुरदासपुर पंजाब

प्रकाशन का स्थान:

मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया, भारत

क़ादियान 143516, गुरदासपुर, पंजाब

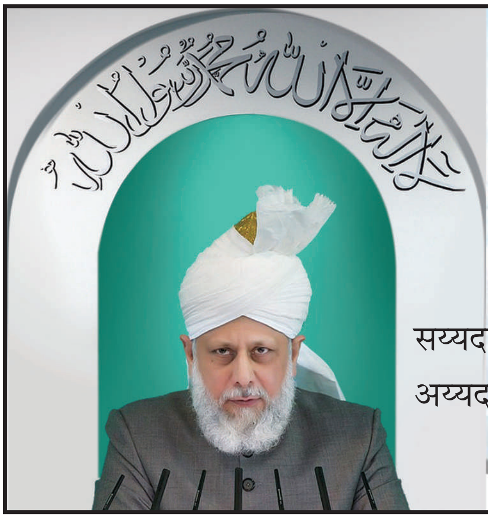

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस
अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक - 20.03.2020
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

23 मार्च मसीह मौऊद दिवस के संदर्भ में सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़ुत्बः जुम्अः

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :-

तीन दिन के बाद 23 मार्च है, यह वह दिन है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बैअत का शुभारम्भ फ़रमाया था और यूँ नियमबद्ध रूप में आपके मसीह मौऊद के दावे के साथ जमाअत अहमदिया की भी बुनियाद पड़ी। जमाअत में यह दिन मसीह मौऊद दिवस के रूप में मनाया जाता है, इस दिन के उपलक्ष में जलसे भी होते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे तथा आपके आने के उद्देश्य के बारे में भी बताया जाता है इस लिए इस हवाले आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में कुछ वृत्तांत पेश करूँगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस वर्ष सम्भवतः अधिकांश देशों में तथा स्थानों पर जो आजकल वायरस की आपदा फैली हुई है उसके कारण से जलसे न हो सकें, इस लिए मेरे ख़ुत्बः के अतिरिक्त एम.टी.ए. पर भी इस संदर्भ में प्रोग्राम पेश होंगे, उन्हें हर अहमदी को अपने घर में सुनने का प्रयास करना चाहिए अपने बच्चों के साथ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी में आप ही के काम को और आपके दीन को दुनिया में फैलाने के लिए अवतरति किए गए थे। अतः आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं-

''मैं खोल कर कहता हूँ और यही मेरी आस्था तथा मज़हब है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के अनुसरण तथा पद्‌चिन्हों पर चलने के बिना कोई इंसान कोई रूहानी फैज़ तथा कृपा प्राप्त नहीं कर सकता, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

मैं इसको बार बार बयान करुंगा तथा इसकी अभिव्यक्ति से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूँ जो उचित समय पर प्राणियों के सुधार हेतु भेजा गया ता दीन को नवीनतम रूप में दिलों में क़ायम कर दिया जाए। मैं इस तरह भेजा गया हूँ जिस तरह वह व्यक्ति (अर्थात हज़रत ईसा अलै.) मर्द-ए-ख़ुदा कलीमुल्लाह (अर्थात हज़रत मूसा अलै.) के बाद भेजा गया था। जिसकी रूह हीरोडिस के शासन काल में बड़ी कठिनाईयों के बाद आसमान की ओर उठाई गई तथा केवल मुसलमानों के लिए ही नहीं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रत्येक क़ौम तथा धर्म के लोगों को अपनी नियुक्ति का महत्त्व बताया है। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं-

यह भी स्पष्ट हो कि मेरा इस ज़माने में ख़ुदा तआला की ओर से आना केवल मुसलमानों के सुधार के लिए ही नहीं है अपितु मुसलमानों तथा हिन्दुओं और ईसाइयों, तीनों जातियों का सुधार उद्‌देश्य है और जैसा कि ख़ुदा ने मुझे मुसलमानों तथा ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद करके भेजा है ऐसा ही मैं हिन्दुओं के लिए अवतार के रूप में हूँ तथा मैं बीस वर्ष की अवधि अथवा कुछ अधिक अवधि से इस बात को विख्यात कर रहा हूँ कि मैं उन पापों को दूर करने के लिए जिनसे धरती भर गई है जैसा कि मसीह इब्ने मरयम के रंग में हूँ ऐसा ही कृष्ण के रंग में भी हूँ जो हिन्दू धर्म के समस्त अवतारों में से एक बड़ा अवतार था।

फिर अपनी नियुक्ति का महत्त्व बयान करते हुए फ़रमाते हैं- इंसान जो कुछ अल्लाह ताअला के आदेशों की अवहेलना करता है वह सब पाप का कारण बन जाता है। एक तुच्छ सा सिपाही सरकार की ओर से कोई निर्देश लेकर आता है तो उसकी बात न मानने वाला दोषी माना जाता है तथा दंडित किया जाता है। केवल नाम के शासनाधिकारियों का यह हाल है तो इन सब सरकारी अधिकारियों के ऊपर सबसे बड़े आदेश कर्ता की ओर से आने वाले का अपमान तथा अवहेलना करना कितनी अधिक अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना है। ख़ुदा तआला स्वाभिमानी है उसने आवश्यकतानुसार ठीक उचित समय पर बिगड़ी हुई शताब्दी के सिर पर एक आदमी भेजा ताकि वह लोगों को सत्यमार्ग की ओर बुलाए। उसकी समस्त योजना को पाँव के नीचे कुचलना एक बड़ा पाप है।

फिर आप फ़रमाते हैं- इस्लाम जैसे पवित्र एंव शुद्ध धर्म पर इतने हमले किए गए हैं कि इस्लाम के विरुद्ध जो कुछ प्रकाशित होता है, यदि सबको एकत्र किया जाए तो एक पहाड़ बनता है। मुसलमानों की ऐसी दशा है कि मानो उनमें जान ही नहीं तथा सब के सब मर गए हैं। इस समय यदि ख़ुदा तआला भी चुप रहे तो फिर क्या हाल होगा। ख़ुदा का एक हमला इंसान के हज़ार हमले से बढ़ कर है और ऐसा है कि उससे दीन का बोल बाला हो जाए।

फिर हज़रत अक़्दस हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुनिया को सामान्य उपदेश देते हुए फ़रमाते हैं कि हमारी अन्तिम नसीहत यही है कि तुम अपने ईमान की चिंता करो, यह न हो कि तुम अहंकार तथा अवहेलना करके ख़ुदाए ज़ुलजलाल की दृष्टि में उपप्रद्रवी ठहरो। देखो ख़ुदा ने तुम पर ऐसे समय में कृपा की जो कृपा करने का उचित समय था, सो कोशिश करो कि ता पूरी सज्जनता के वारिस हो जाओ।

आप अलै. ने दुनिया को सावधान किया कि ख़ुदा तआला के भेजे हुए के साथ लड़ाई मत करो, जब अल्लाह तआला ने भेजा है तो वह सहायता और सामर्थ्य भी प्रदान करता है, निशान भी दिखाता है। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे जलाल से भरे हुए शब्दों में फ़रमाया कि दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे क़बूल न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़बूल करेगा और बड़े ज़ोर आवर हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर कर देगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अत: आज दो सौ से ऊपर देशों में फैली हुई अहमदिया जमाअत इस बात की घोषणा कर रही है कि अल्लाह तआला आपकी सच्चाई दुनिया पर ज़ाहिर फ़रमाता चला जा रहा है। अल्लाह तआला हमें भी आपके मिशन को फैलाने में भागीदार बनाए तथा हमारे ईमान और विवेक को सुदृढ़ बनाए और हमें अपने दायित्वों के निर्वाह का सामर्थ्य प्रदान करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने आजकल दुनिया में फैलने वाले करोना वायरस के विषय में फ़रमाया- इस वायरस ने दुनिया को इस बात पर सोचने के लिए विवश कर दिया है कि ख़ुदा की ओर झुकें किन्तु वास्तविक ख़ुदा तथा जीवित ख़ुदा तो केवल इस्लाम का ख़ुदा है जिसने अपनी ओर आने वालों को रास्ता दिखाने का ऐलान फ़रमाया है। अत: इन परिस्थितियों में हमें जहाँ अपने आपको को संवारने की आवश्यकता है, अपनी तबलीग़ को प्रभाव पूर्ण रंग में करने की आवश्यकता है, दुनिया को पहले से बढ़ कर इस्लाम के बारे में परिचित करने की आवश्यकता है तथा फिर हर अहमदी की यह कोशिश होनी चाहिए कि दुनिया को बताए कि यदि अपने अस्तित्व को अमर रखना चाहते हो तो अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानो, यदि अपना बेहतर परिणाम चाहते हो तो अपने जन्म दाता ख़ुदा को पहचानो कि अन्तिम जीवन का परिणाम जो है वही वास्तविक परिणाम है। उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ तथा उसके प्राणियों के हक़ अदा करो।

फ़रमाया:- ये आपदाएँ तो अब दुनियादार भी कहते हैं कि बढ़ती चली जानी हैं इस लिए अपने बेहतर अंजाम के लिए बड़ी आवश्यकता है कि हम भी ख़ुदा तआला की ओर पलटें तथा दुनिया को भी बताएँ कि वास्तविक अंजाम आिखरत के जीवन का अंजाम है जिसकी ओर तुम्हें अल्लाह तआला की ओर हर हाल में आना होगा। इसके बारे में एक विद्वान की चेतावनी यह है कि भयावह वायरस की उत्पत्ति में अनुवांशिक बदलाव के फैलने की बड़ी सम्भावना है तथा इसके साथ ही कुछ वर्षों में एक नए

करोना वायरस के दुनिया में फैल जाने की भी सम्भावना है। उसने लिखा है कि अगले प्रत्येक तीन वर्ष के बाद सम्भ्वत: कोई नया रोग आ जाए। वैज्ञानिक करोना वायरस पर क़ाबू पा सकते हैं किन्तु महामारी के विरुद्ध इंसानों का युद्ध कभी न समाप्त होने वाला एक युद्ध है। अतएव इसकी लम्बी रूप रेखा है वह तो पूरी बयान नहीं हो सकती किन्तु अपने अंजाम के शुभ होने के लिए हमें ख़ुदा तआला से पहले से बढ़ कर सम्बंध स्थापित करने की आवश्यकता है, अल्लाह इसकी तौफीक़ दे हमें। करोना के बारे में पहले ही निर्देश दे चुका हूँ, पुन: स्मरण करा दूँ क्यूँकि अब यह पूरे विश्व में बड़ी तेज़ी से फैल रहा है तथा यहाँ भी इसका प्रभाव अत्यधिक है अब शासन भी इस बात के लिए विवश हो गया है कि चेष्टा करे तथा घोर चेष्टा करे, विराट अभियान चलाए। जब बीमारियाँ आती हैं, महामारियाँ आती हैं तो हर एक को अपनी लपेट में ले सकती हैं इस लिए हर एक को बड़ी सावधानी की आवश्यकता है, सरकारी निर्देशानुसार काम करें। बड़ी आयु के लोग, रोगी अथवा ऐसे रोग से ग्रस्त लोग जिनके शरीर की प्रतिरोधक शक्ति क्षीण हो जाती है उनको अत्यधिक सावधान रहने की आवश्यकता है।

बड़ी आयु के लोग घर से कम निकलें, मस्जिद में आने में भी सावधानी बरतें, जुम्अ: भी अपने इलाक़े की मस्जिद में पढ़ें, सिवाए इसके कि इस बात पर भी शासन की ओर से पाबन्दी लग जाए कि जुम्अ: के लिए भीड़ भी न हो। महिलाएँ समान्यत: मस्जिद में आने से बचें, बच्चों के साथ आती हैं उनको बचना चाहिए। बच्चों को भी आदत डालें कि जल्दी सोएँ और जल्दी उठें, आठ नौ घन्टे की नींद पूरी करके, फिर बाज़ारों में उपलब्ध खाद्य पदार्थों खाने से भी बचें, विशेषत: ये जो चिप्स इत्यादि के पैकिट हैं। फिर यह भी डाक्टर आजकल कहते हैं कि पानी बार-बार पीना चाहिए, अनिवार्य है कि एक घन्टे बाद, आधे पौने घन्टे बाद एक दो घूँट पी लें, यह भी बीमारी से बचने के लिए एक साधन है। हाथों को साफ रखना चाहिए, कम से कम पाँच बार वज़ू करने वाले जो हैं उनको सफ़ाई का अवसर मिल जाता है, इसकी ओर ध्यान दें। रूमाल आगे रख कर अथवा अब डाक्टर कहते हैं कि बाज़ू अपना समाने रख कर छींकें ताकि इधर उधर छींटें न उड़ें। अतएव स्वच्छता अति आवश्यक है तथा इसका ध्यान रखना चाहिए, परन्तु अन्तिम साधन दुआ है और यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हम सबको इसके बुरे प्रभाव से बचाए। उन समस्त अहमदियों के लिए भी विशेष रूप से दुआ करें जो इस रोग से ग्रस्त हैं किसी कारण से अथवा डाक्टरों को सन्देह है कि उनको भी यह वायरस है अथवा किसी भी अन्य रोग से पीड़ित हैं, सबके लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उन्हें भी बचा कर रखे। सामान्य रूप से प्रत्येक के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला दुनिया को इस महामारी के प्रभाव से बचा कर रखे, जो बीमार हैं उन्हें पूर्णत: स्वास्थ्य प्रदान करे तथा हर अहमदी को शिफ़ा अता फ़रमाने के साथ साथ ईमान और विवेक में भी सुदृढ़ता पैदा करने का सामथ्र्य प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में निबंध रचना तथा
धार्मिक चर्चाओं के मध्य ख़ुदा तआला का समर्थन और ईमानवर्धक घटनाओं का प्रकटन

(तनवीर अहमद नासिर, उप संपादक अख़बार बदर उर्दू क़ादियान)

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब सयालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी पुस्तक "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम" में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बचपन की एक विचित्र घटना लिखते हैं कि

"महमूद चार एक वर्ष का था। हज़रत (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम - उद्धरित) आमतौर पर दिनचर्या के अनुसार अंदर बैठे लिख रहे थे। मियां महमूद दियासिलाई लेकर वहां आए और आपके साथ बच्चों का एक ग्रुप भी था। पहले कुछ देर आपस में खेलते झगड़ते रहे फिर जो कुछ दिल में आया, उन मुसव्वादात (लिखे हुए कागज़ों) को आग लगा दी और आप ख़ुश होने लगे और तालियाँ बजाने और हज़रत लिखने में व्यस्त हैं, सिर उठा कर देखते भी नहीं कि क्या होर हा है। इतने में आग बुझ गई और क़ीमती मुसव्वदे राख का ढेर हो गए। और बच्चों को किसी और खेल ने अपनी ओर खींच लिया। हज़रत को संदर्भ के वाक्यांश मिलाने के लिए किसी पिछले काग़ज़ को देखने की ज़रूरत हुई। उससे पूछते हैं ख़ामोश। इस से पूछते हैं डरा जाता है। आख़िर एक बच्चा बोल उठा कि मियां साहिब ने काग़ज़ जला दीए हैं। औरतें बच्चे और घर के सब लोग हैरान और अंगुश्त ब-दंदाँ (उँगलियाँ दांतों में लिए) कि अब क्या होगा..... परन्तु हज़रत मुस्कुरा कर फ़रमाते हैं, ख़ूब हुआ। इस में अल्लाह तआला का कोई बड़ा भेद होगा और अब ख़ुदा तआला चाहता है कि इस से बेहतर मज़मून समझाए।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम,पृष्ठ 23 प्रकाशन कैनेडा)

इस घटना से जहां सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक निहायत ख़ूबसूरत आचरण क्षमा और विनम्रता का पता चलता है वहीं इस बात का भी अनुमान होता है कि जो ज्ञान के दरिया आप ने बहाए वह ख़ुदा तआला ने एक विशेष हिक्मत के अधीन आप नेअपनी ओर से अता फ़रमाए थे। जिस ज़माने में आप आए उस वक़्त इस्लाम चारों ओर से इस्लाम के दुश्मनों के आरोपों से घिरा हुआ था। विशेषता ईसाई और आर्यासमाजी अत्यधिक गंदे और भड़काने वाले लेख इस्लाम के विरुद्ध प्रकाशित कर रहे थे। इन हालात को देखकर आप का हृदय बिना पानी के मछली की भांति तड़पता था। आपकी इस बेक़रारी का अनुमान आपकी इस दुआ से होता है, ख़ुदा के समक्ष आप बयान करते हैं : "ख़ुदाया मुझे ऐसे शब्द अता फ़र्मा और ऐसी तक़रीरें इल्हाम कर जो उन दिलों पर अपना नूर डालें और अपनी विष रोधक विशेषता से उनका विष दूर कर दें।"(शहादतुल क़ुरआन, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 398)

अल्लाह तआला ने आप की दुआओं को अत्यधिक क़बूलीयत का स्थान दिया और आप की प्रार्थनाओं को सुना और इस्लाम के दुश्मनों के आरोपों को ध्वस्त करने के लिए अरबी, फ़ारसी और उर्दू भाषाओँ पर आप को पूर्ण प्रतिभा अता फ़रमाई और उन्हें आप का पूर्ण आज्ञाकारी और अनुयायी कर दिया और यह

प्रतिभा आपको अता फ़रमाई कि चाहे कैसा ही विषय हो आप आसानी के साथ ठोस और व्यापक लेख लिखा करते और जिस भाषा में लिखते उसके अत्यधिक उचित शब्दों को अपनी अपनी जगह पर मोतीयों की तरह जोड़े हुए नज़र आते। आप निबंध रचना में ख़ुदा तआला की अदृश्य सहायता और मदद के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं :

"मैं ख़ुदा तआला के चमत्कारों को विशेषता निबंध रचना के समय भी अपने सम्बन्ध में देखता हूँ क्योंकि जब मैं अरबी में या उर्दू में कोई वाक्यांश लिखता हूँ तो मैं महसूस करता हूँ कि कोई अंदर से मुझे शिक्षा दे रहा है और हमेशा मेरी तहरीर जबकि अरबी हो या उर्दू या फ़ारसी, दो हिस्सों पर विभाजित होती है। (1) एक तो यह कि बड़ी आसानी से सिलसिला शब्दों और अर्थों का मेरे सामने आता जाता है और मैं उसको लिखता जाता हूँ और जबकि इस तहरीर में मुझे कोई कठिनाई नहीं उठानी पड़ती (2) दूसरा हिस्सा मेरी रचना का केवल इंसानी समर्थय से अलग तौर पर है और वह यह है कि जब मैं उदाहरणता एक अरबी वाक्यांश लिखता हूँ और वाक्यांश के सिलसिले में कुछ ऐसे शब्दों की ज़रूरत पड़ती है कि वे मुझे मालूम नहीं हैं तब उनके सम्बन्ध में ख़ुदा तआला की वह्यी मार्ग दर्शन करती है और वे शब्द ही वह्यी की तरह रूहुल-क़ुदुस मेरे दिल में डालता है और ज़बान पर जारी करता है उदाहरणता अरबी वाक्यांश के सिलसिला के लिखने में मुझे एक शब्द की ज़रूरत पड़ी जो ठीक ठीक बिसयारी अयाल का अनुवाद है और वह मुझे मालूम नहीं और वाक्यांश का सिलसिला उसका मुहताज है तो तुरन्त दिल में वही वह्यी की तरह शब्द "ज़फ़फ़" डाला गया जिसके अर्थ हैं बिसयारी अयाल। या उदाहरणता तहरीर लिखते समय पर मुझे ऐसे शब्द की ज़रूरत पड़ी जिसके अर्थ हैं ग़म और ग़ुस्सा से चुप हो जाना और मुझे वह शब्द मालूम नहीं तो तुरन्त दिल पर वह्यी हुई कि "वजूम"। ऐसा ही अरबी वाक्यांश का हाल है। अरबी तहरीरों के वक़्त में कई सौ बने-बनाए फ़िक़्रात वह्यी की तरह दिल पर अवतरित होते हैं और या यह कि कोई फ़रिश्ता एक काग़ज़ पर लिखे हुए वे वाक्यांश दिखा देता है और कुछ वाक्यांश क़ुरआन की आयतें होती हैं या उनके समान कुछ थोड़े से बदलाव से ...... अत: यही रहस्सय है जिसके कारण से मैं एक संसार को अरबी के चमत्कारों वाली सुवक्त तफ़सीर लिखने के मुक़ाबले पर बुलाता हूँ। अन्यथा इन्सान क्या चीज़ और इब्ने आदम की क्या वास्तविकता कि ग़रूर और घमंड के मार्ग से एक संसार को अपने मुक़ाबिल पर बुलाए।" (नुज़ूलुल मसीह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 18 पृष्ठ 434 से 436)

उस समय के विद्वानों को लिखित रूप में शास्त्रार्थ की दावत और ख़ुदा तआला की सहायता के महान निशान :

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लुधियाना से 26 मार्च 1891 ई. को एक इश्तिहार के द्वारा समस्त प्रसिद्ध उल्मा को लिखित रूप में शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया और लिखा कि मेरा दावा कदापि ख़ुदा के कथन और उसके रसूल के कथन के विरुद्ध नहीं यदि आप साहिबान स्थान और तिथि निर्धारित करके एक आम जलसे में मुझसे लिखित रूप में शास्त्रार्थ नहीं करेंगे तो आप ख़ुदा तआला और उसके पवित्र बंदों की नज़र में विरोधी ठहरेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इश्तिहार पर और तो कोई सामने नहीं आया लेकिन मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने यह कहना शुरू कर दिया कि मिर्ज़ा साहिब को चाहीए कि वह मुझ से शास्त्रार्थ कर लें। यह शास्त्रार्थ लिखित रूप में था और 20 से 29 जुलाई 1891 तक जारी रहा। हज़रत अकदस का मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से शास्त्रार्थ शुरू हुआ। यह शास्त्रार्थ लिखित रूप में था और 20 से 29 जुलाई 1891 ई. तक अर्थात दस दिन चलता रहा। शास्त्रार्थ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बुख़ारी शरीफ़ रख लेते और अत्यधिक लिखते जाते जब लेख तैयार हो जाता तो पढ़ कर सुना दिया जाता। परन्तु उधर बड़ी मुश्किल से मज़मून तैयार किया जाता और बड़ी दिक़्क़त से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी अपना लेख तैयार करके सुनाते।

एक चमत्कार : हज़रत पीर सिराजुल्हक साहिब की रिवायत के अनुसार इस शास्त्रार्थ के दौरान मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने बुख़ारी का एक हवाला माँगा। उस वक़्त वह हवाला हज़रत अकदस को याद नहीं था और न आपके खादिमों में से किसी और को याद था। परन्तु हज़रत अकदस ने बुख़ारी शरीफ़ का नुस्ख़ा मंगाया और उसके पृष्ठ पलटने शुरू कर दिया और जल्दी जल्दी उसका एक-एक पृष्ठ उल्टने लगे और आख़िर एक जगह पहुंच कर आप ठहर गए और फ़रमाया। लो यह देख लो। देखने वाले सब हैरान थे कि यह क्या बात है किसी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पूछा, तो आपने फ़रमाया कि जब मैंने पुस्तक हाथ में लेकर पृष्ठ उल्टाने शुरू किए तो मुझे पुस्तक के पृष्ठ ऐसे नज़र आते थे कि मानो वह ख़ाली हैं और उन पर कुछ नहीं लिखा। इस लिए मैं उनको जल्द जलद उल्टाता गया आख़िर मुझे एक पृष्ठ मिला जिस पर कुछ लिखा हुआ था। और मुझे यक़ीन हो गया कि यह वही हवाला है जिसकी मुझे ज़रूरत है मानो अल्लाह तआला ने ऐसा चमत्कार प्रकट फ़रमाया कि उस जगह के अतिरिक्त जहां हवाला वर्णित था अन्य समस्त पृष्ठ आपको ख़ाली नज़र आए। (तारीख अहमदियत, भाग प्रथम पृष्ठ 408)

इस शास्त्रार्थ में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने बहुत चालाकियां कीं लेकिन वे सब उन पर उल्टी पड़ीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम उसे क़ुरआन की तरफ़ लाते थे लेकिन वह अपने बचाओ के लिए हदीस की ओर भागता था। असल बेहस मसीह अलैहिस्सलाम के मृत्यु तथा जीवित होनी पर होनी थी लेकिन वह इस से भी बचता रहा। आख़िरी दिन जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पर्चा सुनाना शुरू किया तो मौलवी-साहब का चेहरा काला पड़ गया और ऐसी घबराहट हुई और इस क़दर होश उड़े हुए कि नोट करने के लिए जब क़लम उठाया तो ज़मीन पर क़लम मारने लगे दवात उसी तरह रखी रह गई और क़लम कई बार ज़मीन पर मारने से टूट गया और जब यह हदीस आई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो हदीस क़ुरआन के विरुद्ध हो वह छोड़ दी जाए और क़ुरआन को ले लिया जाए तो इस पर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब को निहायत ग़ुस्सा आया और कहा यह हदीस बुख़ारी में नहीं है। और जो यह हदीस बुख़ारी में हो तो मेरी दोनों बीवीयों पर तलाक़ है। इस तलाक़ के शब्द से समस्त लोग हस पड़े और मौलवी-साहब से शर्म के कारण और कुछ न बन पड़ा। और बाद में कई दिनों तक लोगों से मौलवी-साहब कहते रहे कि नहीं नहीं मेरी दोनों बीवीयों पर तलाक़ नहीं पड़ी। और न मैंने तलाक़ का नाम

लिया है। पहले तो चंद लोगों को उसकी ख़बर थी लेकिन अब मौलवी-साहब ही ने हज़ारों को इसकी सूचना कर दी। कई महीने बाद जबकि यह शास्त्रार्थ प्रकाशित हो चुका था, दिल्ली में एक जलसा आयोजित हुआ जिसमें बहुत से विद्वानों ने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी पर ज़बरदस्त कटाक्ष किया कि तुमने जो मिर्ज़ा साहिब से लुधियाना में शास्त्रार्थ किया है इस में तुमने क्या-किया और क्या करके दिखाया असल बेहस तो कुछ भी न हुई। बटालवी साहिब ने उत्तर दिया कि असल बेहस किस तरह करता इसका पता ही नहीं। क़ुरआन शरीफ़ में मसीह के जीवित होने का और आकाश की ओर जाने का कोई वर्णन नहीं। हदीसों से केवल नुज़ूल साबित होता है मैं मिर्ज़ा साहिब को हदीसों पर लाता था और वह मुझे क़ुरआन की ओर ले जाते थे। (तारीखे अहमदियत, भाग प्रथम पृष्ठ 410)

निबंध रचना का महान चमत्कार

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम अपने दावा की तब्लीग़ और इशाअत के लिए दिल्ली भी तशरीफ़ ले गए 29 सितंबर 1891ई. को दिल्ली पहुंचे और नवाब लोहारो की दौ मंज़िला कोठी स्थित मुहल्ला बल्लीमारा में ठहरे हुए थे और सय्यद नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी और शम्सुल ओलमा मौलवी अब्दुल हक़ साहिब को मसीह की वफ़ात पर लिखित रूप में शास्त्रार्थ की दावत दी। मौलवी अब्दुलहक साहिब ने तो क्षमा मांग ली लेकिन मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के प्रेरित करने पर शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो गए। इसके बाद मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और उनके साथियों की चालों और साज़िशों का जो बाज़ार गर्म हुआ और किस तरह ख़ुदा के शेर ने दिल्ली की जामा मस्जिद में मौलवी नज़ीर हुसैन को ललकारा वह अहमदियत के इतिहास का एक खुला अध्याय है। मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब तो किसी तरह इस शास्त्रार्थ का कड़वा घूँट पीने से बच गए लेकिन मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो और 23 अक्तूबर 1891 को शास्त्रार्थ का आरंभ हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शास्त्रार्थ शुरू होने से पूर्व अपने दावा के सम्बन्ध में मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब और उनके मित्रों को संबोधित करके एक उच्च कोटि का भाषण दिया। हज़ूर का यह भाषण अभी चल रहा था कि मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब भाषण के बीच ही में बोल उठे कि आप आज्ञा दें तो मैं सहन के दूसरे हिस्सा में जा कर बैठूँ और वहां कुछ लिखूँ। हज़रत अक़्दस ने फ़रमाया। बहुत अच्छा! इसलिए मौलवी साहब सेहन के उस हिस्सा में जा बैठे और जो मज़मून घर से लिख कर लाए थे नक़ल करवाने लगे। हालाँकि शर्त यह थी कि कोई अपना पहला मज़मून न लिखे बल्कि जो कुछ लिखना होगा वह उसी वक़्त जलसे के बेहस में लिखना होगा। इस ख़िलाफ़वरज़ी पर मौलाना अब्दुल करीम साहिब ने कहा यह तो शर्त के ख़िलाफ़ है । पीर सिराजुल्हक साहिब नुमानी ने हज़रत अक़्दस से अर्ज़ किया कि हुज़ूर आज्ञा दें तो मैं मौलवी-साहब से कह दूं कि आप लिखा हुआ तो लाए हैं यही दे दीजिए। ताकि उसका उत्तर लिखा जाए। हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने इस की न चाहते हुए आज्ञा दे दी। उन्होंने खड़े हो कर कहा कि मौलवी-साहब लिखे हुए मज़मून को नक़ल कराने की क्या ज़रूरत है देर होती है लिखा हुआ मज़मून

दे दीजिए ताकि इधर से जल्दी उत्तर लिखा जाए। मौलवी-साहब ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने घबरा कर उत्तर दिया। नहीं नहीं! मैं मज़मून लिख कर तो नहीं लाया सिर्फ़ नोट लिख लाया था, जिन्हें विस्तार से लिख रहा हूँ। हालाँकि वह मज़मून का एक-एक शब्द ही लिखवा रहे थे। इसके उत्तर में पीर साहिब ने कुछ कहना चाहा परन्तु हज़रत अकदस ने उन्हें रोक दिया। और हुज़ूर ने मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब से यह फ़रमाया कि जब मौलवी-साहब मज़मून दें तो मुझे भेज दिया जाए, ऊपर के कमरे में तशरीफ़ ले गए और मौलवी-साहब के मज़मून देने पर मुंशी साहिब ने वह ले जाकर हुज़ूर की ख़िदमत में पेश कर दिया। हज़रत अकदस ने मौलवी-साहब के मज़मून पर पहले पृष्ठ से लेकर आख़िर पृष्ठ तक बहुत तेज़ी से नज़र फ़रमाई और इस का उत्तर लिखना शुरू कर दिया। जब मज़मून के दो पृष्ठ तैयार हो गए तो हुज़ूर मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब को नीचे नक़ल करने को दे आए। एक-एक पृष्ठ लेकर मौलवी अब्दुल करीम साहिब और अब्दुल कुद्दूस साहिब ने नक़ल करना शुरू किया। इसी तरह मुंशी साहिब हज़रत साहिब का मसव्वदा लाते और ये दोनों साहिब नक़ल करते रहते। हज़रत अकदस इतनी तेज़ी से लिख रहे थे कि अब्दुल कुद्दूस साहिब जो ख़ुद भी बड़े तेज़ लिखने वाले थे आश्चर्य चकित हो गए। और हुज़ूर की तहरीर पर उंगली का पोरा लगा कर स्याही देखने लगे कि यह कहीं पहले का लिखा हुआ तो नहीं। मुंशी ज़फ्फ़र अहमद साहिब ने कहा कि यदि ऐसा हो तो यह एक महान चमत्कार होगा कि उत्तर पहले से लिखा हुआ है। हज़रत अकदस की यह हैरत-अंगेज़ क़ुव्वत लेखन शेली की देखकर मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब को हुज़ूर की ख़िदमत में निवेदन करना पड़ा कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं कल अपने रहने के स्थान ही से उत्तर लिख लाऊं। हुज़ूर ने बिना किसी देरी के आज्ञा दे दी और फिर मौलवी-साहब ने शास्त्रार्थ के ख़त्म होने तक यही तरीक़ा रखा कि हज़रत अकदस का मज़मून मिलने पर हुज़ूर से आज्ञा लेकर अपने रहने के स्थान पर चले जाते और मज़मून वहीं से लिख कर लाते उन्होंने सामने बैठ कर कोई मज़मून तहरीर नहीं किया। इस शास्त्रार्थ का विस्तार पूर्ण वर्णन "अल्हक दिल्ली" के नाम से प्रकाशित हुआ"। (तारीखे अहमदियत, भाग अव्वल, मुलख्ख़स पृष्ठ 421 से 432)

एक रात में अरबी भाषा की चालीस हज़ार धातुओं की प्रप्ति

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सन् 1893 ई. में पुस्तक आईना कमालाते इस्लाम की रचना फ़रमाई जिसमें असंख्य मत्वपूर्ण शास्त्रार्थ उदाहरणता स्थान फ़ना, बक़ा, लिक़ा, रूहुल-क़ुदुस की दाइमी रिफ़ाक़त और मलायक और जिन्नात के अस्तित्व के प्रमाण पर नए ढंग से रोशनी डाली। जनवरी 1893 ई. को जब पुस्तक का उर्दू संस्करण पूर्ण हो चुका तो मौलाना अब्दुल करीम साहिब सयालकोटी ने एक मज्लिस में हज़रत अकदस से अर्ज़ किया कि इस पुस्तक के साथ मुस्लमान फ़िर्कों और पीरज़ादों पर समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए एक पत्र भी प्रकाशित होना चाहीए। हुज़ूर ने यह सुझाव बहुत पसंद किया। आपका इरादा था कि यह पत्र उर्दू में लिखा जाए लेकिन रात को कुछ इल्हामी संकेतों में आपको अरबी में लिखने की तहरीक हुई और अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ करने पर आपको रात ही रात में अरबी की चालीस हज़ार धातुएं सिखाई गईं। इसलिए आपने उसी इल्हामी शक्ति से "अल्तबलीग़" के नाम से अरबी

भाषा की उच्च कोटि में एक पत्र लिखा जिसमें आपने हिंदुस्तान, अरब, ईरान, तुर्की, मिस्र और अन्य देशों के पीरों,गद्दी पर बैठे हुए, ज़ाहिदों, सूफ़ियों और फ़कीरों और साधूओं तक सच्चाई का सन्देश पहुंचा दिया। "अल्तबलीग़" के बाद अरबी भाषा में हज़ूर ने वे बेनज़ीर लिटरेचर पैदा किया कि अरब भाषा के विद्वानों और अन्य भाषों के विद्वानों की ज़बानें इस के मुक़ाबले में गूंगी हो गईं। "अल्तबलीग़" के सम्बन्ध में एक अरब विद्वान् ने कहा कि इसे पढ़ कर ऐसा आनदं आया कि दिल में आया कि सिर के बल झूमता हुआ क़ादियान पहुँच जाऊं। त्राबुलस के एक प्रसिद्ध विद्वान् सय्यद मुहम्मद सईदी शामी ने इसे पढ़ते ही बेसाख़्ता कहा। ख़ुदा की कसम ऐसे वाक्यांश अरब नहीं लिख सकते। और अंततः इसी से प्रभावित हो कर अहमदियत स्वीकार कर ली। हज़रत अक़दस फ़रमाया करते थे। कि हमारी जितनी अरबी तहरीरें हैं ये सब एक रंग की इल्हामी ही हैं क्योंकि सब ख़ुदा की विशेष सहायता से लिखी गई हैं। फ़रमाते थे कभी कबार मैं कई शब्दों और वाक्यांश लिख जाता हूँ परन्तु मुझे उनके अर्थ नहीं आते। फिर लिखने के बाद शब्दकोष देखता हूँ तो पता लगता है।

इन पुस्तकों का यह एजाज़ी रंग देखकर वरोधी उल्मा को यक़ीन ही नहीं आता था कि यह आपकी रचनाएँ हैं निश्चित रूप से समझते थे कि आपने इस उद्देश्य के लिए उल्मा का कोई ख़ुफ़ीया गिरोह नोकरी पर रखा हुआ है इसलिय एक दफ़ा एक मौलवी-साहब इस "ख़ुफ़ीया गिरोह" का सुराग़ लगाने के लिए क़ादियान आए और रात के वक़्त मस्जिद मुबारक में गए। मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूर थलवी उन दिनों मस्जिद मुबारक से जुड़े कमरे में रहते थे मौलवी-साहब ने हज़रत मुंशी साहिब से पूछा कि मिर्ज़ा साहिब की अरबी तसानीफ़ ऐसी हैं कि उन जैसा कोई उच्च कोटि का वाक्यांश नहीं लिख सकता ज़रूर मिर्ज़ा साहिब कुछ उल्मा से मदद लेकर लिखते होंगे और-वह समय रात ही का हो सकता है तो क्या रात को कुछ व्यक्ति ऐसे आपके पास रहते हैं जो इस काम में मदद देते हों हज़रत मुंशी साहिब ने कहा मौलवी मुहम्मद चिराग़ साहिब और मौलवी मुईन साहिब ज़रूर आप के पास रहते हैं यही उल्मा रात को सहायता करते होंगे। हज़रत अकदस को मुंशी साहिब की यह आवाज़ पहुंच गई और हुज़ूर बहुत हँसे। क्योंकि मौलवी मुहम्मद चिराग़ साहिब और मौलवी मुईनुद्दीन साहिब दोनों हुज़ूर के अनपढ़ सेवकों में से थे इसके बाद मौलवी-साहब उठकर चले गए। अगले दिन जब हुज़ूर अस्र के बाद मस्जिद में पहले के अनुसार बैठे तो वहां पर मौलवी-साहब भी मौजूद थे। हज़ूर मुंशी साहिब की तरफ़ देखकर मुस्कुराए और फ़रमाया वे रात वाले उल्मा उन्हें दिखला भी तो दो। उस वक़्त हुज़ूर ने मौलाना अब्दुल करीम साहिब को भी रात की घटना सुनाई वह भी हँसने लगे हज़रत मुंशी साहिब ने मुहम्मद चिराग़ और मुईनुद्दीन को बुला कर उस मौलवी-साहब के सामने खड़ा कर दिया वह मौलवी-साहब उन दोनों "उल्मा" को देखकर चले गए और एक बड़े थाल में मिठाई ले आए और अपने बारह साथीयों समेत हुज़ूर के पवित्र हाथों पर बैअत करली।

(उद्धृत तारीखे अहमदियत, भाग प्रथम, पृष्ठ 472 से 475)

☆ ☆ ☆

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक
का
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम
(आप की रचनाओं के आलोक में)

अनुवादक- फरहत अहमद आचार्य

काश यह शे'र मेरे मुख से निकला होता

"एक बार की घटना है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मकान के साथ वाली छोटी मस्जिद में जो मस्जिद मुबारक कहलाती है अकेले टहल रहे थे और धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाते जाते थे तथा इसके साथ ही आपकी आंखों से आंसुओं की धारा बहती चली जा रही थी। उस समय एक निष्कपट मित्र ने बाहर से आकर सुना तो आप^{अ.} आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी हज़रत हस्सान^{रज़ि.} ने आंहज़रत^{स.अ.व.} के निधन पर कहा था गुनगुना रहे थे और वह शे'र यह है :-

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِیْ فَعَمِیَ عَلَیْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَآءَ بَعْدَكَ فَلْیَمُتْ فَعَلَیْكَ كُنْتُ اُحَاذِرُ

(दीवान हस्सान बिन साबित)

"अर्थात् हे ख़ुदा के प्रिय रसूल ! तू मेरी आंख की पुतली था जो आज तेरे निधन के कारण अंधी हो गई है। अब तेरे बाद जो चाहे मरे मुझे तो केवल तेरी मृत्यु का भय था जो हो चुकी।"

वर्णनकर्ता कहता है कि जब मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस प्रकार रोते हुए देखा और उस समय आप मस्जिद में अकेले टहल रहे थे तो मैंने घबराकर कहा कि हज़रत ! यह क्या बात है और हुज़ूर को कौन सा आघात पहुंचा है ? हज़रत मसीह मौऊद^{अ.} ने कहा - मैं इस समय हस्सान^{रज़ि.} बिन साबित का यह शे'र पढ़ रहा था और मेरे हृदय में यह इच्छा पैदा हो रही थी कि "काश यह शे'र मेरी जीभ से निकलता।"

(सीरत-ए-तय्यिब: पृष्ठ-27,28 लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए.)

ऐसा प्रेम मैंने किसी व्यक्ति में नहीं देखा

हज़रत मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद^{अ.} की पहली पत्नी से सब से बड़े पुत्र थे। आप हुज़ूर के जीवन में जमाअत अहमदिया में सम्मिलित नहीं हुए थे अपितु आप ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय^{रज़ि.} के युग में बैअत की। आप के अहमदियत स्वीकार करने से पूर्व की बात है कि उनसे एक बार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद के शिष्टाचार तथा आदतों के बारे में पूछा तो इस के उत्तर में उन्होंने कहा कि

"एक बात मैंने पिता श्री (अर्थात् हज़रत मसीह मौऊद^{अ.}) में विशेष तौर पर देखी है। वह यह कि

आंहज़रत[स.अ.व.] के विरुद्ध पिता जी थोड़ी सी बात भी सहन नहीं कर सकते थे। यदि कोई व्यक्ति आंहज़रत[स.] की शान के विरुद्ध थोड़ी सी बात भी करता था तो पिता जी का चेहरा लाल हो जाता था और क्रोध से आंखें परिवर्तित होने लग जाती थीं और ऐसी सभा से तुरन्त उठ कर चले जाते थे। आंहज़रत[स.अ.व.] से तो पिता श्री को प्रेम था, ऐसा प्रेम मैंने किसी व्यक्ति में नहीं देखा तथा मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब ने इस बात को बार-बार दोहराया।"

(सीरत-ए-तय्यिब:, पृष्ठ-134, लेखक - मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए.)

क्या मैं हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के मज़ार को देख भी सकूंगा !

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब संस्थापक जमाअत अहमदिया के सुपुत्र हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए. लिखते हैं :-

"एक बार बिल्कुल घरेलू वातावरण की बात है कि हज़रत मसीह मौऊद की तबियत कुछ ख़राब थी और आप घर में चारपाई पर लेटे हुए थे तथा हज़रत अम्मांजान (अल्लाह उनकी आराम गाह को प्रकाशित करे) और हमारे नाना जान ने कोई ऐसी बात कही कि अब तो हज के लिए यात्रा और मार्ग इत्यादि की सुविधा पैदा हो रही है, हज को चलना चाहिए। उस समय हरमैन शरीफ़ैन (मक्का-मदीना) की कल्पना में हज़रत मसीह मौऊद की आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं और आप अपनी हाथ की उंगली से अपने आंसू पोंछते जाते थे। हज़रत नाना जान की बात सुनकर कहा - यह तो ठीक है और हमारी भी हार्दिक इच्छा है परन्तु मैं सोचा करता हूं कि क्या मैं आंहज़रत[स.अ.व.] के मज़ार को देख भी सकूंगा।"

यह एक शुद्ध घरेलू वातावरण की प्रत्यक्षत: छोटी सी बात है परन्तु यदि विचार किया जाए तो इस में उस अथाह समुद्र की तूफ़ानी लहरें ठाठे मारती दिखाई देती हैं जो रसूल[स.] के प्रेम के बारे में हज़रत मसीह मौऊद के पवित्र हृदय में ठाठे मारती थीं। हज की किसे इच्छा नहीं परन्तु तनिक उस व्यक्ति के अपार प्रेम का अनुमान लगाइए जिस की रूह हज की कल्पना में परवाना की भांति पवित्र रसूल (जिस पर मेरे प्राण न्योछावर हों) के मज़ार पर पहुंच जाती है और वहां उसकी आंखें उस दृश्य को देखने की शक्ति न पाकर बन्द होना प्रारंभ हो जाती हैं।"(सीरत-ए-तय्यिब:, पृष्ठ-35,36, लेखक मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. अप्रैल 1960)

हमारे स्वामी को गालियां देता है और हमें सलाम करता है

एक बार हज़रत मसीह मौऊद[अ.] यात्रा में थे तथा लाहौर के स्टेशन के पार एक मस्जिद में वुज़ु कर रहे थे। उस समय पंडित लेखराम हुज़ूर से मिलने के लिए आया और आकर सलाम किया, किन्तु हज़रत साहिब ने कुछ उत्तर न दिया। उसने इस विचार से कि कदाचित् आप ने सुना नहीं दूसरी ओर होकर पुन: सलाम किया, परन्तु आप ने फिर भी ध्यान न दिया। तत्पश्चात् उपस्थित लोगों में से किसी ने कहा कि हुज़ूर ! पंडित लेखराम ने सलाम किया था। आपने कहा —

“हमारे स्वामी को गालियां देता है और हमें सलाम करता है।”
(सीरतुल महदी भाग - प्रथम, पृष्ठ-272,
लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. 1935)

जिस सभा में हमारे रसूले ख़ुदा को बुरा-भला कहा गया तुम उस सभा में क्यों बैठे रहे ?

“एक घटना लाहौर के जल्सा बिच्छूवाली के साथ संबंध रखती है। आर्य लोगों ने लाहौर में एक जल्सा आयोजित किया तथा उस में भाग लेने के लिए प्रत्येक धर्म को निमंत्रण दिया तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी बड़े आग्रहपूर्वक निवेदन किया कि आप भी इस अन्तर्राष्ट्रीय जल्सा के लिए कोई लेख लिखें तथा वादा किया कि जल्सा में कोई बात सभ्यता के विरुद्ध तथा किसी धर्म के हृदय को कष्ट पहुंचाने वाली नहीं होगी। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक विशेष शिष्य हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब को जो बाद में जमाअत अहमदिया के प्रथम ख़लीफ़ा हुए, बहुत से अहमदियों के साथ लाहौर भेजा और उनके हाथ एक लेख लिख कर भेजा, जिसमें इस्लाम धर्म की अच्छाइयां बड़ी विशेषता तथा बड़े मनमोहक रंग में वर्णन की गई थीं, परन्तु जब आर्यों की ओर से लेख पढ़ने वाले की बारी आई तो उसने अपनी जाति के आश्वासनों की अवहेलना करते हुए अपने लेख में रसूले करीम[स.अ.व.] के विरुद्ध इतना विष उगला तथा ऐसी गन्दगी उछाली कि ख़ुदा की शरण। जब इस जल्सा की सूचना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहुंची और जल्से में सम्मिलित होने वाले सज्जन क़ादियान वापस आए तो आप[अ.] हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब तथा अन्य अहमदियों पर क्रोधित हुए तथा बार-बार जोश के साथ कहा — कि जिस सभा में हमारे ख़ुदा के रसूल[स.] को बुरा-भला कहा गया और गालियां दी गईं, तुम उस सभा में क्यों बैठे रहे ? और क्यों न तुरन्त उठ कर बाहर चले आए ? तुम्हारे स्वाभिमान ने किस प्रकार सहन किया कि तुम्हारे स्वामी को गालियां दी गईं और तुम चुपचाप बैठे सुनते रहे ? फिर आप ने बड़े जोश के साथ क़ुर्आन की यह आयत पढ़ी कि

اِذَا سَمِعۡتُمۡ اٰیٰتِ اللّٰہِ یُکۡفَرُ بِہَا وَیُسۡتَہۡزَاُ بِہَا فَلَا تَقۡعُدُوۡا مَعَہُمۡ حَتّٰی یَخُوۡضُوۡا فِیۡ حَدِیۡثٍ غَیۡرِہٖۤ (सूरह अन्निसा - 141)

अर्थात् हे मोमिनो ! जब तुम सुनो कि ख़ुदा की आयतों का हृदय को कष्ट पहुंचाने के रंग में इन्कार किया जाता और उन पर हंसी उड़ाई जाती है तो तुम ऐसी सभा से तुरन्त उठ जाया करो उस समय तक कि ये लोग किसी सभ्यतापूर्ण शैली में वार्तालाप को अपना लें।

इस सभा में हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब (प्रथम ख़लीफ़ा) भी मौजूद थे और वह हज़रत मसीह मौऊद[अ.] के उन शब्दों पर लज्जा के साथ सर झुकाए बैठे रहे अपितु हज़रत मसीह मौऊद के इस स्वाभिमानपूर्ण कलाम से समस्त मज्लिस ही लज्जा और शर्म से कटी जा रही थी।”
(सीरत-ए-तय्यिब:, पृष्ठ-31 से 33, लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. 1935)

प्रकाश की मश्कें

जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं :-

"एक रात इस विनीत ने इतनी प्रचुरता के साथ दरूद शरीफ़ पढ़ा कि हृदय और रूह उस से सुगंधित हो गई। उसी रात स्वप्न में देखा कि फ़रिश्ते अमृत के रूप में प्रकाश की मश्कें इस विनीत के मकान में लिए आते हैं तथा उनमें से एक ने कहा - कि ये वही बरकतें हैं जो तूने मुहम्मद की ओर भेजी थीं सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।" (बराहीन अहमदिया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-प्रथम, पृष्ठ-598 हाशिए का हाशिया नं. 3)

इतना कभी हृदय न दुखता

"इतना बुरा कहना, निन्दा तथा अपशब्दों से परिपूर्ण पुस्तकें नबी करीम[स.अ.व.] के बारे में प्रकाशित की गईं कि जिन के सुनने से शरीर कंपायमान होता और हृदय रो-रो कर यह साक्ष्य देता है कि यदि ये लोग हमारे बच्चों को हमारी आंखों के सामने क़त्ल करके मारते और हमारे अति प्रिय और घनिष्ठ परिजनों को जो सांसारिक परिजन हैं टुकड़े-टुकड़े कर डालते और हमें बड़े अपमान के साथ वध कर देते तथा हमारे समस्त धन-सम्पत्तियों पर क़ब्ज़ा कर लेते तो ख़ुदा की क़सम पुनः ख़ुदा की क़सम हमें दुःख न होता और हृदय न दुखता जितना इन गालियों तथा उस अपमान से जो हमारे रसूले करीम[स.] का किया गया दुखा।
(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-5, पृष्ठ-51, 52)

हज़रत प्रवर्तक जमाअत अहमदिया का कथन है :-

(1) ख़ुदा का दर्शन कराने वाला

"हमने एक ऐसे नबी का दामन पकड़ा है जो ख़ुदा के दर्शन कराता है। किसी ने यह शे'र बहुत ही अच्छा कहा है —

मुहम्मद - ए - अरबी बादशाह - ए - हर दो सरा
करे है रूहे क़ुदुस जिसके दर की दरबानी,
उसे ख़ुदा तो नहीं कह सकूं पै कहता हूं
कि उसकी मर्तबादानी में है, ख़ुदा दानी।

हम किस मुख से ख़ुदा का आभार प्रकट करें जिसने हमें ऐसे नबी का अनुसरण करने का सौभाग्य प्रदान किया जो भाग्यशाली लोगों की आत्माओं के लिए सूर्य है जैसे शरीरों के लिए सूर्य जो अंधकार के समय उदय हुआ और समस्त संसार को प्रकाशित कर दिया। वह न थका न ही शिथिल हुआ जब तक कि अरब के सम्पूर्ण भाग को अनेकेश्वरवाद से पवित्र न कर दिया। वह अपनी सच्चाई का स्वयं प्रमाण है क्योंकि उस का प्रकाश प्रत्येक युग में मौजूद है और उसका सच्चा अनुसरण मनुष्य को इस प्रकार पवित्र करता है जैसे एक स्वच्छ एवं उज्ज्वल नदी का पानी मैले कपड़े को।"
(चश्म-ए-मा'रिफ़त भाग द्वितीय, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-23, पृष्ठ-202, 203)

(2) सर्वश्रेष्ठ, उच्चतम, पूर्णतम, उज्ज्वलतम तथा पवित्रतम नबी

"चूंकि हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] अपनी शुद्धात्मा, प्रफुल्लता, सतवृत्ति, लज्जा, सत्य एवं पवित्रता, ख़ुदा पर

भरोसा वफादारी तथा ख़ुदा से प्रेम की सम्पूर्ण बातों में सब नबियों से बढ़कर तथा सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उच्चतम, पूर्णतम, उज्ज्वलतम एवं पवित्रतम थे। इसलिए महा वैभवशाली, प्रतापी ख़ुदा ने उनको विशेष गुणों के इत्र से सर्वाधिक सुगंधित किया और वह सीना एवं हृदय जो समस्त पूर्वकालीन तथा बाद में आने वालों के सीना एवं हृदय से विशालतम, पवित्रतम, निर्दोषतम, प्रकाशतम तथा प्रेममय था वह इसी योग्य ठहरा कि उस पर ऐसी वह्यी (ईशवाणी) उतरे जो समस्त पूर्वकालीन तथा बाद में आने वालों की ईशवाणियों से अधिक शक्तिशाली तथा पूर्णतम होकर ख़ुदा की विशेषताओं को दिखाने के लिए एक अत्यन्त उज्ज्वल विशाल दर्पण हो।"
(सुर्मा चश्म आर्य - हाशिया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-2, पृष्ठ-71)

(3) मुजद्दिद-ए-आ'ज़म (महान सुधारक)

"हमारे नबी[स.अ.व.] सच्चाई को प्रकट करने के लिए एक महान मुजद्दिद थे जो खोई हुई सच्चाई को पुनः संसार में लाए। इस गौरव में हमारे नबी[स.अ.व.] के साथ कोई भी नबी भागीदार नहीं कि आपने समस्त संसार को एक अंधकार में पाया और फिर आप के प्रादुर्भाव से वह अंधकार प्रकाश में परिवर्तित हो गया। जिस जाति में आप प्रकट हुए आप का निधन नहीं हुआ जब तक कि उस समस्त जाति ने अनेकेश्वरवाद का चोला उतार कर एकेश्वरवाद का लिबास न पहन लिया तथा न केवल इतना अपितु वे लोग ईमान के उच्चतम स्तरों तक पहुंच गए और उनसे श्रद्धा, निष्ठा एवं विश्वास के वे कार्य प्रकट हुए कि जिनका उदाहरण संसार के किसी भाग में नहीं पाया जाता। यह सफलता हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं हुई।"
(लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-20, पृष्ठ-206)

(4) एक ख़ुदा में लीन पुरुष की अंधकारमय रातों की दुआएं

वह जो अरब के जंगली देश में एक अद्भुत घटना हुई कि लाखों मुर्दे थोड़े दिनों में जीवित हो गए तथा पीढ़ियों से बिगड़े हुए लोग ख़ुदा के रंग में रंगीन हो गए, आंखों के अंधे देखने लगे और गूंगों की जीभ पर अध्यात्म ज्ञान जारी हुए और विश्व में अचानक एक ऐसी क्रान्ति ने जन्म लिया, कि न पहले किसी आंख ने देखी और न किसी कान ने सुनी। कुछ जानते हो वह क्या था ? वह एक ख़ुदा में लीन एक व्यक्ति की अंधकारपूर्ण रातों की दुआएं ही थीं जिन्होंने संसार में शोर मचा दिया और वे विलक्षण बातें दिखाईं जो उस अनपढ़, असहाय व्यक्ति से दुर्लभ की भांति दिखाई देतीं थीं।

اللھم صل و سلم و بارک علیہ وآلہ بعدد ھمہ و غمہ وحزنہ لھذہ الامۃ وانزل علیہ انوار رحمتک الی الابد۔
(बरकातुद्दुआ, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-6, पृष्ठ-10-11)

(5) पूर्ण मानव एवं पूर्ण नबी

वह मनुष्य जिसने अपने व्यक्तित्व से, अपनी विशेषताओं से, अपने कार्यों से, अपने कर्मों से तथा अपनी आध्यात्मिक एवं पवित्र शक्तियों के दरिया से पूर्ण कौशल का आदर्श ज्ञान, व्यवहार, सत्य एवं दृढ़ता के तौर

पर प्रदर्शित किया तथा पूर्ण मानव कहलाया ..... वह मानव जो सर्वाधिक पूर्ण तथा कामिल मनुष्य था तथा पूर्ण बरकतों के साथ आया, जिस से आध्यात्मिक अवतरण एवं प्रलय के दिन मुर्दों को उठाने के कारण विश्व की प्रथम प्रलय प्रकट हुई और उसके आगमन से एक सम्पूर्ण निर्जीव जगत जीवित हो गया। वह मुबारक नबी हज़रत ख़ातमुल अंबिया इमामुल अस्फ़िया (पवित्रात्मा लोगों का इमाम) ख़तमुल मुर्सलीन, तथा नबियों के गौरव जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] हैं। हे प्रिय ख़ुदा ! इस प्यारे नबी पर वह दया और दरूद भेज जो संसार के प्रारंभ से तू ने किसी पर न भेजा हो।" (इत्मामुल हुज्जह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-8, पृष्ठ-308)

(6) जिसके साथ हम ..... इस नश्वर संसार से कूच करेंगे

"हमारे धर्म का सारांश और निचोड़ यह है कि "*ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह*" हमारी आस्था जो हम इस सांसारिक जीवन में रखते हैं जिसके साथ हम ख़ुदा की कृपा एवं सामर्थ्य के साथ इस नश्वर संसार से कूच करेंगे यह है कि हमारे स्वामी तथा सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] हैं जिनके हाथ से धर्म पूर्ण हो चुका और वह ने'मत पूर्ण रूप से पहुंच चुकी है जिसके द्वारा मनुष्य सद्मार्ग ग्रहण करके ख़ुदा तआला तक पहुंच सकता है।"

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-3, पृष्ठ-169-170)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी प्रवर्तक जमाअत अहमदिया अपने अरबी तथा फ़ारसी काव्य में अपने प्रियतम[स.अ.व.] का वर्णन करते हुए कहते हैं :-

يَا شَمْسَ مُلْكِ الْحُسْنِ وَالْاِحْسَانِ
نَوَّرْتَ وَجْهَ الْبَرِّ وَالْعُمْرَانِ

हे सौन्दर्य एवं उपकार देश के सूर्य तूने आबादियों तथा जंगलों का चेहरा प्रकाशमान कर दिया है।

وَ ذِكْرُ الْمُصْطَفٰى رَوْحٌ لِقَلْبِىْ
وَ صَارَ لِمُهْجَتِىْ مِثْلَ الطَّعَامِ

और नबी[स.अ.व.] की चर्चा मेरे हृदय के लिए आराम है और मेरे प्राण के लिए भोजन के समान है। (नूरुल हक़ भाग-2, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-8, पृष्ठ-258)

وَ اٰثَرْتُ حُبَّكَ بَعْدَ حُبِّ مُهَيْمِنِىْ
وَ تصُبِىْ جَنَانِىْ مِنْ سَنَاكَ وَ تَجْلِبُ

(हे मेरे प्यारे) ख़ुदा तआला के प्रेम के बाद मैंने तेरे प्रेम को प्राथमिकता दी है तथा आपने मेरे हृदय को अपने प्रकाश से प्रेमी बना लिया। (करामातुस्सादिक़ीन, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-7, पृष्ठ-104)

حسن رویش بہ زماہ و آفتاب

خاک کویش بہ زمشک و عنبرے

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे का सौन्दर्य चन्द्रमा एवं सूर्य से भी अधिक है और उसके कूचे की मिट्टी कस्तूरी तथा अंबर से उत्तम है। (दीबाचा बराहीन अहमदिया, भाग प्रथम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-1, पृष्ठ-18)

منکہ ے بینم رُخ آں دلبرے

جاں فشانم گر دہد دل دیگرے

मैं जो उस (सच्चे प्रियतम) का चेहरा देख रहा हूं यदि कोई दूसरा उसको अपना हृदय देता है तो मैं उस पर अपने प्राण क़ुर्बान करता हूं। (ज़मीमा सिराजे मुनीर, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-12, पृष्ठ-97)

محو روئے او شدت ایں روئے من

بوئے او آید زبام و کوئے من

यह मेरा चेहरा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे में खो गया और मेरे मकान और कूचे से उसकी सुगंध आ रही है। (तिरयाक़ुल क़ुलूब, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-15, पृष्ठ-383)

و گر استاد را نامے نداتم

کہ خواندم در دبستان محمدؐ

"मुझे किसी अन्य गुरू का नाम ज्ञात नहीं क्योंकि मैंने मुहम्मद[स.अ.व.] के मदरसा से शिक्षा प्राप्त की है।"

हज़रत प्रवर्तक जमाअत अहमदिया अपने उर्दू काव्य में अपने स्वामी से हार्दिक प्रेम को प्रकट करते हुए लिखते हैं :-

हर तरफ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हमने,
कोई दीं दीने मुहम्मद सा न पाया हमने।
कोई मज़हब नहीं ऐसा जो निशां दिखलाए,
यह समर बाग़े मुहम्मद से ही खाया हमने।
तेरी उल्फ़त से है मा'मूर मेरा हर ज़र्रा,
अपने सीने में ये इक शहर बसाया हमने।

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-5, पृष्ठ-224, 225)

बरतर गुमानो वहम से अहमद[स.] की शान है,
जिसका ग़ुलाम देखो मसीहुज़्ज़मान है।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-286)

★★★

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: - ''अत: हे वे सभी लोगो! जो स्वयं को मेरी जमाअत में शुमार करते हो, आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत शुमार किए जाओगे जब सचमुच संयम के मार्गों पर क़दम मारोगे। इसलिए अपनी पाँच समय की नमाज़ों को ऐसे भय एवं एकाग्रचित्त होकर अदा करो कि मानो तुम ख़ुदा तआला को देख रहे हो तथा अपने रोज़ों को ख़ुदा के लिए सच्चाई के साथ पूरे करो। प्रत्येक जो ज़कात के योग्य है, ज़कात दे और जिस पर हज फ़र्ज़ हो चुका है और कोई बाधा नहीं वह हज करे। नेकी (पुण्य) को बड़ी सावधानी से अदा करो और बुराई को उससे घृणा करते हुए छोड़ दो। निश्चय पूर्वक याद रखो, कोई कर्म परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता जो संयम से खाली हो। प्रत्येक नेकी की जड़ तक़्वा (संयम) है।...'' (रूहानी ख़ज़ायन भाग-19, कश्ती-ए-नूह, पृष्ठ-15)

ينبت لكم به الزرع والزيتون والنخيل والاعناب ومن كل الثمرت ان في ذلك لاية لقوم يتفكرون
(النحل:12)
Prop : Sk. Ishaque
FFT Fruits
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat, Hotel, Secunderabad-3

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal flipkart.com
amazon.com Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Golden Marie Biscuits
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

(AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY)

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

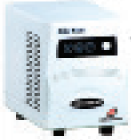

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

LIYAKAT ALI

Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

जमाअत अहमदिया का परिचय

फ़रहत अहमद आचार्य

जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक

जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी हैं। आप 13 फ़रवरी 1835 ई. (14 शव्वाल 1250 हिज्री) को क़ादियान (भारत) में पैदा हुए और 26 मई 1908 ई. (24 रबीउस्सानी 1326 हिज्री) को मृत्यु प्राप्त करके ख़ुदा तआला के दरबार में उपस्थित हो गए।

आप ने इस्लामी कैलेन्डर के अनुसार तेरहवीं सदी हिज्री के अन्त तथा चौदहवीं सदी के प्रारंभ में यह दावा किया कि मैं वही मसीह मौऊद और महदी हूं जिसकी उम्मत-ए-मुहम्मदिया चौदह सौ वर्ष से प्रतीक्षा कर रही है।

प्रादुर्भाव का उद्देश्य

आपने अपने प्रादुर्भाव का उद्देश्य यह वर्णन किया कि पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों की शिक्षाओं के विषय में उम्मत में पैदा होने वाले ग़लत विचारों तथा दृष्टिकोणों का सुधार किया जाए तथा विभिन्न समुदायों के मतभेदों का निवारण किया जाए और सम्पूर्ण विश्व में तर्कों द्वारा अन्य समस्त धर्मों पर सच्चे धर्म की शिक्षाओं की श्रेष्ठता और प्रभुत्व सिद्ध किया जाए।

आप ने इस बात को भली भांति स्पष्ट किया कि इस्लाम धर्म अल्लाह तआला का अन्तिम धर्म, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] ख़ातमुन्नबिय्यीन तथा पवित्र क़ुर्आन अन्तिम शरीअत है। इसकी कोई आयत न निरस्त है और न उसमें किसी परिवर्तन की गुंजायश है। आपने कहा कि रसूले करीम[स.अ.व.] के अनुसरण तथा बरकत के कारण अल्लाह तआला ने आप को यह स्थान प्रदान किया है।

मसीह का मसील (समरूप)

इस दावे के साथ ही आपने पवित्र क़ुर्आन, हदीसों तथा उम्मत के मान्य महापुरुषों के लेखों से यह सिद्ध किया कि बनी इस्राईल की ओर अवतरित होने वाले हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम आकाश पर जीवित मौजूद नहीं अपितु मृत्यु प्राप्त हो चुके हैं तथा उम्मत-ए-मुहम्मदिया में अवतरित होने वाले मामूर को हज़रत मसीह[अ.] बहुत सी समानताओं के कारण उपमा के तौर पर मसीह की उपाधि दी गई है। जैसे किसी बड़े दानशील व्यक्ति को हातिमताई और बहुत बहादुर को शेर कह देते हैं।

मसीह तथा महदी एक ही अस्तित्व है

आप ने सिद्ध किया कि मसीह और महदी एक ही अस्तित्व के दो नाम हैं तथा उसके जो लक्षण पवित्र क़ुर्आन में सांकेतिक तौर पर तथा हदीसों में विस्तारपूर्वक वर्णन हुए हैं तथा उम्मत के महापुरुषों पर ख़ुदा ने जो प्रकटन किए वे सब आप के युग और आप के अस्तित्व में पूरे हो रहे हैं।

प्रतीक्षा तथा प्रादुर्भाव

तेरहवीं सदी के अन्त तक ये लक्षण एक-एक करके पूरे हो रहे थे तथा सम्पूर्ण इस्लामी जगत इस मौऊद (प्रतिज्ञात) की प्रतीक्षा में दिन गिन रहा था कि आप ने सन् 1882 ई. में ख़ुदा के इल्हाम से ख़ुदा की ओर से नियुक्त होने का दावा किया और इस्लाम के पक्ष में समस्त मिथ्या धर्मों विशेषतया ईसाइयत तथा आर्य धर्म के विरुद्ध लेखनी द्वारा तथा महान आध्यात्मिक जिहाद प्रारंभ किया, जिसे देखकर तत्कालीन उदार प्रवृत्ति रखने वाले विद्वानों ने मिथ्या धर्मों के विरुद्ध आप को विजेता सेनापति ठहराया।

जमाअत की नींव

23 मार्च 1889 ई. को आप ने एक जमाअत की नींव रखी तथा भविष्यवाणियों के अनुसार उसका नाम जमाअत अहमदिया रखा। जिसके प्रारंभिक सदस्य चालीस थे और अब यह जमाअत करोड़ों से आगे निकल चुकी है।

निशान

आप के समर्थन में अल्लाह तआला ने असाधारण आकाशीय तथा पार्थिव निशान दिखाए, जिन में विशेष तौर पर सन् 1894 ई. में चन्द्र और सूर्य ग्रहण तथा सन् 1902 ई. में प्लेग का निशान उल्लेखनीय हैं। उनकी चर्चा ख़ुदा के ग्रन्थों में मौजूद है। आप के दावे के पश्चात् आप का बहुत विरोध हुआ तथा आप और आप की जमाअत को कठिन परीक्षाओं से गुज़रना पड़ा, किन्तु वह शनैः शनैः अपने गन्तव्य की ओर अग्रसर है और अब विश्व के 202 देशों में जमाअत की सुदृढ़ शाखाएं स्थापित हो चुकी हैं।

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया

आप के स्वर्गवास पर हज़रत मुहम्मद मुस्ताफ़ा[स.अ.व.] की भविष्यवाणियों के अनुसार 27 मई सन् 1908 ई. को जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अब जमाअत के पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब आप[अ.] के उत्तराधिकारी हैं। आप के युग के ख़ुत्बे, अन्य महत्त्वपूर्ण भाषण तथा धार्मिक कार्यक्रम डिश (सैटलाइट) के द्वारा सम्पूर्ण विश्व में MTA पर देखे और सुने जाते हैं तथा जमाअत अहमदिया के द्वारा विभिन्न क़ौमों तथा क्षेत्रों के लोग एक जमाअत बन रहे हैं।

सेवाएं

जमाअत अहमदिया ने इस्लाम धर्म की जो महान सेवाएं की हैं उन के कुछ उदाहरणों पर दृष्टि डालें :-

- विश्व की 71 से अधिक भाषाओं में पवित्र क़ुर्आन के अनुवादों का प्रकाशन
- विश्व की 127 भाषाओं में पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों की शिक्षा की विशेषताओं तथा उनकी सच्चाई के तर्कों और विरोधियों के आरोपों के उत्तरों का प्रकाशन
- सम्पूर्ण विश्व में हज़ारों मस्जिदों का निर्माण जिन में स्पेन में 700 वर्ष के पश्चात् पहली निर्माण होने वाली मस्जिद सम्मिलित है।

- जमाअत अहमदिया की व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व में इस समय सैकड़ों स्कूल, दर्जनों हायर सेकेन्डरी स्कूल तथा बीसियों अस्पताल और सैकड़ों होम्यो डिस्पेन्सरियां जनसेवा में व्यस्त हैं।
- इस्लामी जगत की मर्यादा को ऊंचा करना, मुसलमानों के ज्ञान संबंधी, नैतिक, शैक्षिक तथा आर्थिक स्तर को बढ़ाने का भरसक प्रयास इत्यादि सेवाएं जिन का पक्षपाती मुसलमान लीडरों को भी इक़रार है, जिनको एकत्र करें तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है।

बैअत की शर्तें

व्यक्तिगत तथा सामूहिक तौर पर अहमदियत का सन्देश इस्लाम धर्म तथा उसके अनुयायियों के जीवन का सन्देश है। उसका एक प्रमाण उसकी वे शर्तें हैं जिनको स्वीकार करके एक व्यक्ति जमाअत अहमदिया में सम्मिलित होता है। उनका सारांश यह है :-

1. शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना) से बचना
2. झूठ, व्यभिचार तथा अन्य बुराइयों से बचना
3. पांच समय की नमाज़ और तहज्जुद की अदायगी, दरूद शरीफ़ और क्षमायाचना करना तथा अल्लाह तआला की स्तुति एवं प्रशंसा करना
4. ख़ुदा की सृष्टि को कष्ट न देना।
5. अल्लाह के साथ वफ़ादारी और उसकी प्रसन्नता पर प्रसन्न रहना।
6. पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाओं पर कार्यरत होना।
7. अहंकार और अभिमान से बचना।
8. धर्म को संसार पर प्राथमिकता देना।
9. प्रजा से सहानुभूति
10. इमाम महदी से दृढ़ भ्रातृत्व संबंध।

इन शर्तों को पढ़कर भलीभांति स्पष्ट हो जाता है कि अहमदियत कोई नया धर्म और शरीअत प्रस्तुत नहीं करती तथा ये शर्तें क़ुर्आन और हदीस के सारांश के तौर पर ली गई हैं। जमाअत अहमदिया का कलिमा, इस्लाम के अरकान तथा अन्य समस्त सैद्धान्तिक बातें वही हैं जिन पर उम्मत कार्यरत है।

हज़रत प्रवर्तक जमाअत अहमदिया अपने काव्य में कहते हैं :-

वह पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा,
नाम उस का है मुहम्मद[स.] दिलबर मेरा यही है।
उस नूर पर फ़िदा हूं उसका ही मैं हुआ हूं
वह है मैं चीज़ क्या हूं बस फैसला यही है।
दिल में यही है हर दम तेरा सहीफ़ा चूमूं
क़ुर्आं के गिर्द घूमूं का'बा मेरा यही है।

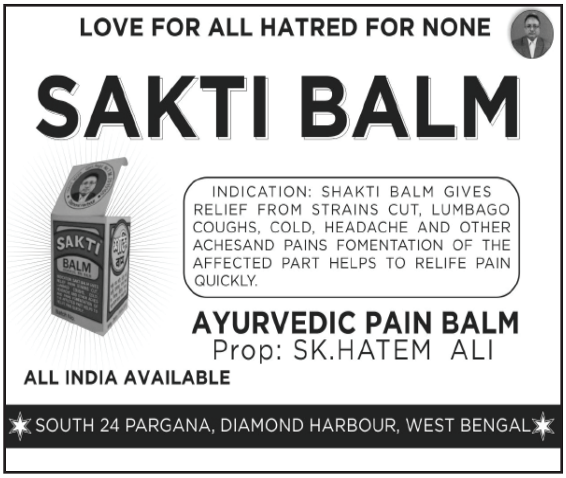
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
SAKTI BALM
INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.
AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI
ALL INDIA AVAILABLE
SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

INDIA MOVES
ON
EXIDE
M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)
Cell :9440996396,9866531100

SWARAJ
SINCE 1974
सलाम मोटर्स
अधिकृत विक्रेता
स्वराज ट्रेक्टर: सेल्स व सर्विस ब्यावर
मो. यूसुफ काठात
9460458032
अताउल्लाह खान
8696714040
शोरूम : मसूदा रोड, चुंगी नाका के पास, ब्यावर

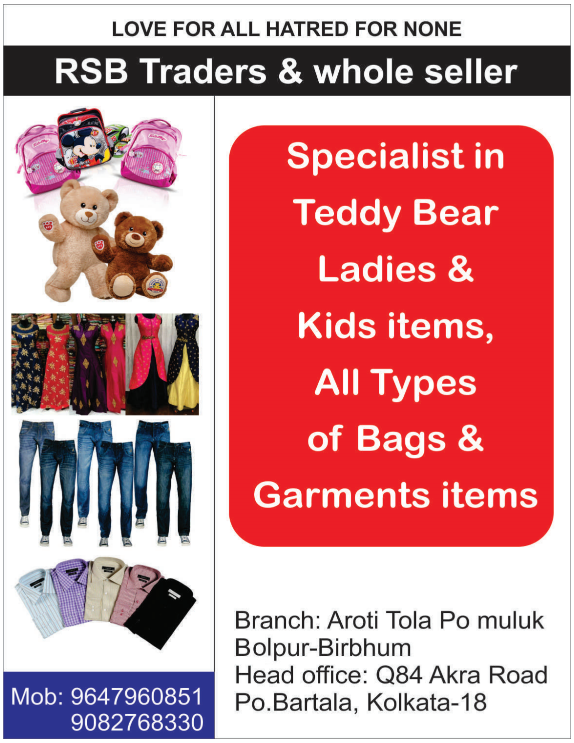
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
RSB Traders & whole seller
Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items
Mob: 9647960851
9082768330
Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

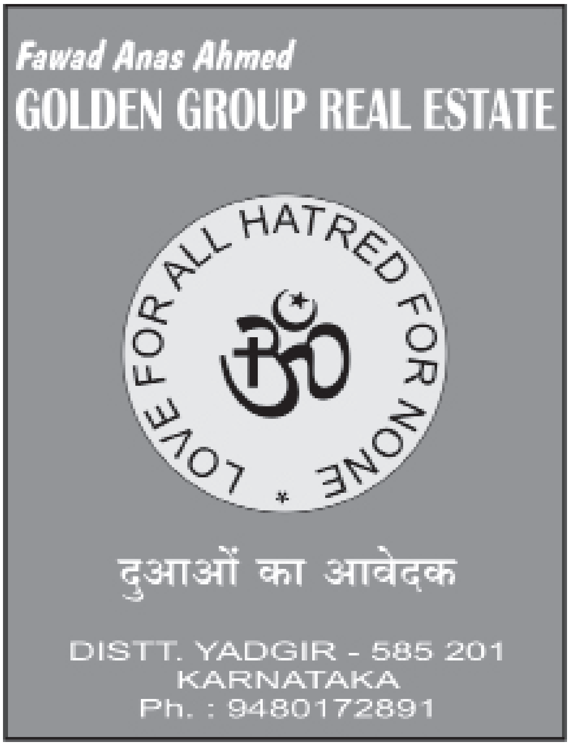
Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
दुआओं का आवेदक
DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

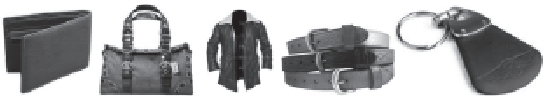

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan

Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

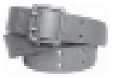

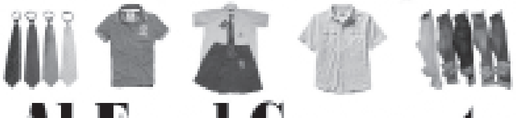

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

मुश्किलों के भँवर से मुक्ति प्राप्त करने का रास्ता

नीचे जो नज़्म लिखी जा रही है ये हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक शेख़ मुहम्मद बख़्श रईस कड़यानवाला गुजरात को लिख कर दी थी जबकि वे अत्यधिक धन संकट में ग्रस्त थे। ख़ुदा ताला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ के फल स्वरूप उनके कष्ट दूर कर दिए।

इक न इक दिन पेश होगा तो फ़ना[1] के सामने
चल नहीं सकती किसी की कुछ क़ज़ा[2] के सामने

छोड़नी होगी तुझे दुनिया ए फ़ानी एक दिन
हर कोई मजबूर है हुक़्मे ख़ुदा के सामने

मुस्तकिल[3] रहना है लाज़िम ऐ बशर तुझको सदा
रन्ज[4] ओ ग़म यास[5] तो अलम फ़िक्र[6] ओ बला के सामने

बारगाहे[7] ईज़दी से तो न यूँ मायूस[8] हो
मुश्किलें क्या चीज़ हैं मुश्किल कुशा[9] के सामने

हाजतें पूरी करेंगे क्या तेरी आजिज़[10] बशर
कर बयाँ सब हाजतें हाजत रवा[11] के सामने

चाहिए तुझ को मिटाना क़ल्ब[12] से नक़्शे दुई[13]
सिर झुका बस मालिके अर्ज़[14] ओ समां के सामने

चाहिए नफ़रत[15] बदी से और नेकी से प्यार
एक दिन जाना है तुझ को भी ख़ुदा के सामने

रास्ती[16] के सामने कब झूठ फ़लता है भला
कदर क्या पत्थर की लअले बे बहा[17] के सामने

☆ ☆ ☆

1. मृत्यु। 2. ख़ुदा का आदेश। 3. आवश्यक। 4. दुःख। 5. निराशा। 6. परेशानी। 7. ख़ुदा की चौखट। 8. निराश। 9. मुश्किल दूर करने वाला। 10. कमज़ोर। 11. ज़रूरत पूरी करने वाला। 12. मन। 13. शिर्क। 14. आकाश तथा धरती। 15. घृणा। 16. सच्चाई। 17. कीमती अनमोल पत्थर।